अनुक्रमणिका

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''अलका सरावगी : व्यक्ति एवं वाङ्मय'' पृष्ठ 1-25

विषय-प्रवेश

1.1 व्यक्ति-परिचय

1.1.1 जन्मतिथि तथा जन्मस्थान

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 परिवार

1.1.4 बचपन

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 नौकरी

1.1.7 विवाह

1.1.8 संतान

1.1.9 मित्र-परिवार

1.1.10 पत्रकार

1.1.11 लेखन की प्रेरणा

1.1.12 संप्रति

1.2 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.2.1 मेधावी छात्रा

1.2.2 प्रकृति-प्रेमी

1.2.3 प्रतिभाशाली

1.2.4 संवेदनशील

1.2.5 शालीन तथा अहंकारहीन

1.2.6 अध्ययनशील

1.2.7 ईश्वर के प्रति आस्थावान

1.2.8 गांधीवादी विचारों से प्रभावित

1.2.9 रचनाओं के प्रति निष्ठावान

1.2.10 हिंदी, अंग्रेजी रचनाओं का प्रभाव

1.2.11 समकालीन लेखकों में अलग पहचान

1.2.12 संघर्षशील व्यक्तित्व

1.2.13 नौकरी के क्षेत्र में असफल

1.2.14 सृजन-प्रक्रिया

1.2.15 नारी-मुक्ति की आकांक्षा

1.2.16 सामाजिक दायित्व वहन

1.2.17 अत्यधिक व्यस्तता

1.3 वाङ्मय परिचय अर्थात् अलका सरावगी की साहित्य-यात्रा

1.3.1 उपन्यास साहित्य

1.3.2 कहानी-संग्रह

1.3.3 अनूदित-साहित्य

1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - ''उपन्यास कला और अलका सरावगी के उपन्यास : स्वरूपगत विवेचन'' **पृष्ठ 26-53**

विषय-प्रवेश

2.1 उपन्यास की परिभाषा

2.1.1 उपन्यास की परिभाषा की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.2 उपन्यास का स्वरूप

2.2.1 उपन्यास के स्वरूप की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3 उपन्यास के तत्व

2.3.1 कथावस्तु या कथानक

2.3.2 पात्र या चरित्र-चित्रण

2.3.3 संवाद या कथोपकथन

2.3.4 देशकाल वातावरण

2.3.5 भाषा-शैली

2.3.6 उद्देश्य

2.3.7 उपन्यास के तत्वों की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3.7.1 कथानक या कथावस्तु की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3.7.2 पात्र या चरित्र-चित्रण की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3.7.3 संवाद या कथोपकथन की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3.7.4 देशकाल वातावरण की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3.7.5 भाषा-शैली की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.3.7.6 उद्देश्य की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

2.4 उपन्यास के प्रकार / भेद

2.4.1 सामाजिक उपन्यास

2.4.2 ऐतिहासिक उपन्यास

2.4.3 मनोवैज्ञानिक उपन्यास

2.4.4 आंचलिक उपन्यास

2.4.5 उपन्यास के प्रकार की दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों का मूल्यांकन

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - "अलका सरावगी के उपन्यास : विषयवस्तु की कलात्मकता का मूल्यांकन" पृष्ठ 54-74

विषय-प्रवेश

3.1 कलि-कथा : वाया बाइपास

3.1.1 आरंभ

3.1.2 विकास

3.1.3 संघर्ष

3.1.4 चरमसीमा

3.1.5 अंत

3.2 शेष कादम्बरी

3.2.1 आरंभ

3.2.2 विकास

3.2.3 संघर्ष

3.2.4 चरमसीमा

3.2.5 अंत

3.3 कोई बात नहीं

3.3.1 आरंभ

3.3.2 विकास

3.3.3 संघर्ष

3.3.4 चरमसीमा

3.3.5 अंत

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - "अलका सरावगी के उपन्यास : चरित्र-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन" पृष्ठ 75-107

विषय-प्रवेश

4.1 कलि-कथा : वाया बाइपास

4.1.1 प्रधान पात्र

4.1.1.1 किशोरबाबू

4.1.1.1-1 उपन्यास का नायक

4.1.1.1-2 माँ से प्रेम करनेवाला

4.1.1.1-3 नेतृत्व-संपन्न

4.1.1.1-4 भविष्य के प्रति सजग

4.1.1.1-5 मेहनती

4.1.1.1-6 स्वाभिमानी

4.1.1.1-7 देश-प्रेमी

4.1.1.1-8 जिज्ञासु

4.1.1.1-9 जिद्दी

4.1.1.1-10 डरपोक

4.1.1.1-11 दिल का मरीज

4.1.1.1-12 दकियानूसी मानसिकता

4.1.2 गौण पात्र

4.1.2.1 अमोलक

4.1.2.2 शांतनु

4.1.3 अन्य पात्र

4.1.4 पात्रों की संख्या में कलात्मकता

4.1.5 पात्रों के चयन में कलात्मकता

4.1.6 चरित्र-चित्रण में कलात्मकता

निष्कर्ष

4.2 शेष कादम्बरी

4.2.1 प्रधान पात्र

4.2.1.1 रूबी दी

4.2.1.1-1 उपन्यास की नायिका

4.2.1.1-2 समाज सेविका

4.2.1.1-3 जिद्दी

4.2.1.1-4 सहनशील

4.2.1.1-5 प्रतिभाशाली

4.2.1.1-6 जिज्ञासु

4.2.1.1-7 अकेली

4.2.1.1-8 प्रेमिका

4.2.1.1-9 उदार

4.2.2 गौण पात्र

4.2.2.1 सविता

4.2.2.2 कादम्बरी

4.2.3 अन्य पात्र

4.2.4 पात्रों की संख्या की दृष्टि से कलात्मकता

4.2.5 पात्रों के चयन में कलात्मकता

4.2.6 चरित्र-चित्रण में कलात्मकता

निष्कर्ष

4.3 कोई बात नहीं

4.3.1 प्रधान पात्र

4.3.1.1 शशांक

4.3.1.1-1 अपाहिज

4.3.1.1-2 दूसरों की चिंता करनेवाला

4.3.1.1-3 स्वावलंबी बनने की छटपटाहट

4.3.1.1-4 जिद्दी

4.3.1.1-5 डरपोक

4.3.1.1-6 जिज्ञासु

4.3.1.1-7 अकेला

4.3.1.1-8 क्रोधी

4.3.1.1-9 मित्र

4.3.1.1-10 असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला

4.3.2 गौण पात्र

4.3.2.1 मिसेज चौधरी

4.3.2.2 आर्थर

4.3.3 अन्य पात्र

4.3.4 पात्रों की संख्या में कलात्मकता

4.3.5 पात्रों के चयन में कलात्मकता

4.3.6 चरित्र-चित्रण में कलात्मकता

निष्कर्ष

4.4 **समन्वित निष्कर्ष**

पंचम अध्याय - " अलका सरावगी के उपन्यास : देशकाल वातावरण सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन" पृष्ठ 108-139

विषय-प्रवेश

5.1 सामाजिक वातावरण

5.2 ऐतिहासिक वातावरण

5.3 महानगरीय वातावरण

5.4 आर्थिक वातावरण

5.5 राजनीतिक वातावरण

5.6 समन्वित निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय - " अलका सरावगी के उपन्यास : भाषाशैली एवं उद्देश्य-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन" पृष्ठ 140-168

6.1 भाषाशैली का कलात्मक मूल्यांकन

6.1.1 विविध शब्दों का प्रयोग

6.1.1.1 संस्कृत शब्द

6.1.1.2 अंग्रेजी शब्द

6.1.1.3 अरबी शब्द

6.1.1.4 फारसी शब्द

6.1.2 वैविध्यपूर्ण भाषा का प्रयोग

6.1.2.1 कहावतें

6.1.2.2 मुहावरे

6.1.2.3 लोकगीत

6.1.2.4 गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग

6.1.2.5 प्रतिकात्मक भाषा का प्रयोग

6.1.2.6 साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग

6.1.3 विविध शैलियों का प्रयोग

6.1.3.1 पूर्वदीप्ति शैली

6.1.3.2 आत्मकथात्मक शैली

6.1.3.3 पत्रात्मक शैली

6.1.3.4 डायरी शैली

6.1.3.5 स्वप्न शैली

6.1.3.6 टेलीफोन शैली

6.1.3.7 किस्सागोई शैली

6.1.3.8 कुरियर शैली

6.2 उद्देश्य-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन

6.3 समन्वित निष्कर्ष

उपसंहार 169-180

संदर्भ ग्रंथ-सूची 181-185

* * * *